

20/11/2022

खाना खाने कि आदत

आदत तो बहुत सी होती है, और कई आदतों जगह के साथ-साथ बदल जाती है। लेकिन ये खाना खाने कि आदत को बदलने में बहुत वक्त लगता है।

कुछ लोगों को खाना खाने वक्त आवाज करना बिल्कुल भी पसंद नहीं होता। पर कुछ तो बिना आवाज किये खा ही नहीं सकते, मानो उनका खाना पचेंगा ही नहीं।

ये तो हो गया खाना खाने वक्त का वर्णन पर अस्ली बात तो इसके बाद है। अब हाथ धोना बाकी है। कुछ सज्जन लोग उठ कर washbasin में हाथ धोते हैं, पर कुछ प्लेट में ही हाथ साफ कर लेते हैं।

ये तो फिर भी ठिक है हद तो तब हो जाती है जब वे जोर से हाथ झटकते हैं। उनके हाथों का पानी आस-पास बैठे सारे लोगों के प्लेट जाता है।

ठिक है अपनी - अपनी आदत होती है, लेकिन ये भी तो देखो, कि अपने कारन किसी को तकलिफ तो नहीं हो रही। ईमान पर ना ले ये बस एक इल्का - फूलका "सच्चा" मजाक था।३

नाम :- वैष्णवी ठाणेश मंड्रा.

E-mail :- vishnavimanz@gmail.com.